अनुक्रमणिका

प्रथम अध्यायः 'सांप्रदायिकता' – परिभाषा, स्वरूप एवं स्वतंत्रतापूर्व और स्वातंत्र्योत्तर सांप्रदायिक परिवेश.(1–26)

प्रस्तावना

1.1 'सांप्रदायिकता' से तात्पर्य / परिभाषा

1.2 'सांप्रदायिकता' स्वरूप

1.3 स्वतंत्रता पूर्व सांप्रदायिक परिवेश

1.3.1 मुस्लिम शासक और भारत

1.3.2 सन् 1857 आजादी की पहली जंग और ब्रिटीश नीति

1.3.3 भारत विखंडन और 'सांप्रदायिकता'

1.4 स्वातंत्र्योत्तर सांप्रदायिक परिवेश

1.4.1 गांधी हत्या और ब्राह्मणों के विरोध में भडकी 'सांप्रदायिकता'

1.4.2 कश्मीर का सीमा प्रश्न और 'सांप्रदायिकता'

1.4.3 वांशिक भेद और 'सांप्रदायिकता'

1.4.4 मंदिर–मस्जिद विवाद और 'सांप्रदायिकता'

1.5 20 वीं सदी के अंतिम दशक का सांप्रदायिक परिवेश

1.5.1 'बाबरी कांड' और 'सांप्रदायिकता' का रौद्र रूप

1.5.2 मुंबई बम विस्फोट और 'सांप्रदायिकता'

1.5.3 कश्मीर में बढता तनाव और 'सांप्रदायिकता'

1.5.4 'आरक्षण नीति' और 'सांप्रदायिकता'

- निष्कर्ष

द्वितीय अध्यायः '20 वीं सदी के अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों की ग्रामांचलिक विकास यात्रा' (27-68)

प्रस्तावना

2.1 स्वतंत्रता पूर्व ग्रामांचलिक उपन्यास-साहित्य :

2.1.1 विवेच्य काल के ग्रामांचलिक उपन्यास-साहित्य में नारी शोषण तथा नारी चेतना

2.1.2 विवेच्य काल के ग्रामांचलिक उपन्यास-साहित्य में किसानों–मजदूरों का शोषण तथा वर्ग–चेतना

2.1.3 विवेच्य काल के ग्रामांचलिक उपन्यास-साहित्य में राजनीतिक व्यवस्था

2.1.4 विवेच्य काल के ग्रामांचलिक उपन्यास-साहित्य में ग्राम-सुधार की नव चेतना

2.2 सन् 1960 से सन् 1975 तक का ग्रामांचलिक उपन्यास साहित्य

2.2.1 विवेच्य काल के ग्रामांचलिक उपन्यास-साहित्य में जाति-व्यवस्था का परिवर्तित रूप

2.2.2 विवेच्य काल के ग्रामांचलिक उपन्यास-साहित्य में ग्रामीण परिवारों का परिवर्तित रूप

2.2.3 विवेच्य काल के ग्रामांचलिक उपन्यास-साहित्य में ग्रामीण नारी का परिवर्तित रूप

2.2.4 विवेच्य काल के ग्रामांचलिक उपन्यास-साहित्य में ग्रामीण राजनीति का परिवर्तित रूप

2.2.5 विवेच्य काल के ग्रामांचलिक उपन्यास-साहित्य में ग्रामीण सुधार की चेतना

2.3 सन् 1975 से सन् 1990 तक का परिवर्तित ग्रामांचलिक उपन्यास-साहित्य :

2.3.1 विवेच्य काल के ग्रामांचलिक उपन्यास-साहित्य में ग्रामांचलों का अभावग्रस्त जीवन

2.3.2 विवेच्य काल के ग्रामांचलिक उपन्यास-साहित्य में ग्रामांचलों का परिवर्तित समाज जीवन

2.3.3 विवेच्य काल के ग्रामांचलिक उपन्यास-साहित्य में राजनीतिक पतन

2.3.4 विवेच्य काल के ग्रामांचलिक उपन्यास-साहित्य में जमींदारों और सरकारी मुलाजिमों से ग्रामांचलों का शोषण

2.3.5 विवेच्य काल के ग्रामांचलिक उपन्यास-साहित्य में ग्राम-विकास की नई चेतना

2.4 20 वीं सदी के अंतिम दशक का ग्रामांचलिक उपन्यास-साहित्य

2.4.1 20 वीं सदी के अंतिम दशक के ग्रामांचलिक उपन्यास-साहित्य का ग्राम-समाज जीवन

2.4.1.1 जातीय एवं धार्मिक भेद

2.4.1.2 समाज में व्याप्त अंधविश्वास

2.4.1.3 स्त्री-पुरूषों के अवैध–यौन संबंध

2.4.1.4 ग्राम-जीवन से पलायन की प्रवृत्ति

2.4.1.5 ग्राम-समाज जीवन में मूल्य-विघटन

2.4.1.6 ग्राम-जीवन में परिवार विघटन

2.4.2 20 वीं सदी के अंतिम दशक के ग्रामांचलिक उपन्यास-साहित्य में ग्राम-राजनीति

2.4.3 20 वीं सदी के अंतिम दशक के ग्रामांचलिक उपन्यास-साहित्य में 'सांप्रदायिकता'

2.4.4 20 वीं सदी के अंतिम दशक के ग्रामांचलिक उपन्यास-साहित्य में 'विस्थापन'

2.4.5 20 वीं सदी के अंतिम दशक के ग्रामांचलिक उपन्यास-साहित्य में शोषण के विविध आयाम

2.4.6 20 वीं सदी के अंतिम दशक के ग्रामांचलिक उपन्यास-साहित्य में आंदोलन की उद्‌भावना

*निष्कर्ष

तृतीय अध्यायः 'विवेच्य उपन्यासों का विवेचनात्मक विश्लेषण'(69–102)

प्रस्तावना

3.1 वीरेंद्र जैन के 'डूब'(1991), उपन्यास का विवेचनात्मक विश्लेषण

3.1.1 जातीय-अंतर्जातीय भावात्मक यौन संबंध

3.1.2 जातीय एवं धार्मिक भेदभाव

3.1.3 किसान-मजदूरों का शोषण

3.1.4 ग्रामीण राजनीति और सामंती वर्ग के हथकंडें

3.1.5 भ्रष्ट सरकारी-नीति

3.1.6 मार्क्सवादी-गांधीवादी विचारधारा के समान जातीय एकात्मता पर बल

3.1.7 विस्थापन और विस्थापितों की शोषण गाथा 'डूब'

3.1.8 'डूब' की भाषा तथा उद्‌देश्य

3.2 मैत्रेयी पुष्पा के 'इदन्नमम'(1994),उपन्यास का विवेचनात्मक विश्लेषण

3.2.1 नई–पुरानी पीढ़ी का संघर्ष

3.2.2 स्त्री–पुरूष अवैध यौन–संबंध

3.2.3 जातीयवाद और सांप्रदायिकता

3.2.4 किसान–मजदूरों का शोषण और आंदोलन उद्‌भावना

3.2.5 ग्रामीण राजनीति का यथार्थ रूप

3.2.6 विकास के नामपर विकृति

3.2.7 ग्रामीण जीवन में हड़पनीति

3.2.8 साहित्य में 'गांधीवाद' का पुनरागमन

3.3 अब्दुल बिस्मिल्लाह के 'मुखडा क्या देखे' (1996), उपन्यास का विवेचनात्मक विश्लेषण

3.3.1 अवैध–यौन तथा अपाकृतिक समलिंगी यौन–संबंध का चित्रण

3.3.2 जातीय भेदाभेद और शोषण

3.3.3 ग्रामांचलिक 'सांप्रदायिकता' का घिनौना मुखडा

3.3.4 ग्रामीण चुनाव राजनीति और चाचा–भतीजावाद

3.3.5 ग्रामीण जीवन में हडपनीति

3.3.6 अकाल–बेरोजगारी से विस्थापन और नगरोन्मुखता

3.3.7 शोषण के खिलाफ संगठन की भावना

3.3.8 'मुखडा क्या देखे' समग्र मूल्यांकन

* निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय : 'हिंदी के विवेच्य ग्रामांचलिक उपन्यासों में चित्रित 'सांप्रदायिकता' (103–148)

प्रस्तावना

4.1 हिंदुस्थान के बँटवारे के कारण सांप्रदायिकता को मिली बढ़ोतरी

4.2 भारत में हुए विभिन्न सांप्रदायिक दंगें

4.3 सांप्रदायिकता के जन–जीवन पर होनेवाले दुष्परिणाम

4.3.1 सांप्रदायिक दंगों से अपरिमित जीवित और वित्त हानि

4.3.2 शरणार्थियों की समस्या और नारी विवशता

4.3.3 समाजिक तनाव तथा धर्मांधता

4.3.4 राजनीतिक परिणाम

4.3.5 भावनिक दूरी तथा राष्ट्रीय एकात्मता के सामने गंभीर संकट

4.4 सांप्रदायिकता को रोकने के उपाय

4.4.1 तात्कालिक उपाय

4.4.1.1 विशेष दंगा विरोधी दल का गठन

4.4.1.2 कार्यक्षम पुलिस तथा तेज न्यायव्यवस्था

4.4.2 व्यापक उपाय

4.4.2.1 हिंदू-मुस्लिम सामंजस्य पर बल

4.4.2.2 धर्मों का समन्वयकारी अध्ययन

4.4.2.3 धार्मिक मूलतत्त्ववाद के विषैले प्रचार को प्रतिबंध

4.4.2.4 समताधिष्ठित समाज रचना का निर्माण और धर्म-निरपेक्ष मूल्यों पर बल

4.4.2.5 युवकों को देश विधायक कामों में लगाना

4.5 विवेच्य उपन्यासों में चित्रित सांप्रदायिकता

4.5.1 'डूब' में चित्रित सांप्रदायिकता

4.5.1.1 बँटवारे से भडके दंगों की खबर से लडैई गाँव में सांप्रदायिकता

4.5.1.2 मोतीसाव का बिरादरी से बहिष्कृत होना

4.5.2 'इदन्नमम' में चित्रित सांप्रदायिकता

4.5.2.1 'मंडल कमिशन' की खबरों से गाँव में उठा कोलाहल

4.5.2.2 अयोध्या के मंदिर-मस्जिद विवाद की खबरों से गाँव में उठा कोलाहल

4.5.3 'मुखडा क्या देखे' में चित्रित सांप्रदायिकता

4.5.3.1 ग्रामांचलों में उभरनेवाले जातीय एवं सांप्रदायिक झगडें

4.5.3.2 अंतर्धर्मीय तथा अंतर्जातीय विवाहों से भडके सांप्रदायिक दंगें

4.5.3.3 गाँव के स्कूली बच्चों में सांप्रदायिकता

4.5.3.4 धर्मांतरण और सांप्रदायिकता

* निष्कर्ष
* समन्वित निष्कर्ष
* उपसंहार (137-148)
* संदर्भ-ग्रंथ सूची (149-153)

आधार ग्रंथ-सूची

सहायक ग्रंथ-सूची

कोश ग्रंथ

पत्र-पत्रिकाएँ

मराठी-ग्रंथ